कलाओं को समावेशी बनाने में शिक्षक की भूमिका

दीपिका शर्मा

कला को रचने (या न रच पाने) से जुड़ा भय, हम जाने अनजाने ख़ुद से जुड़ने वाले बच्चों को दे देते हैं। शिक्षकों के रूप में कला के बारे में हमारा खुलापन और मान्यताएँ इस बात को तय करेंगी कि हमारी कक्षाओं में बच्चे कला रूपों के साथ किस तरह जुड़ते हैं। कला के प्रति सकारात्मक और खुला रवैया अपनाना एक ऐसे समावेशी वातावरण को बढ़ावा देता है जहाँ हर बच्चा ख़ुद को रचनात्मक रूप से तलाशने और अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित महसूस करता है।

"मैं गा नहीं सकती।"

"मैं ड्राइंग नहीं कर सकता।"

"मैं एक्टिंग में अच्छी नहीं हूँ।"

"मैं कोई कलाकार नहीं हूँ।"

हममें से कितने लोग इनमें से किसी भी कथन के साथ ख़ुद को जुड़ा पाते हैं? जब हम बच्चे थे तो हमारे गाना गाने में सुधार करके हमें ऐसी सही लय ताल में गाने के लिए कहा जाता था, जिनसे संगीत और गायन का विचार निर्मित होता था। हममें से अधिकांश लोग अन्त्याक्षरी में सबके साथ गाने से बचते थे, और ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने बाथरूम के इंडियन आयडल होने तक सीमित रह जाते थे। गाने के लिए माइक या मंच दिए जाने पर गाना गा पाने की अपनी असमर्थता में हमारा भरोसा और सुदृढ़ हो जाता था, और हम भागीदारी करने से ही मना कर देते थे, जिससे आगे संगीत सीखने के हमारे अवसर बहुत कम हो जाते थे।

हममें से अधिकांश लोगों के लिए संगीत, नृत्य, चित्र बनाने या अभिनय जैसी गतिविधियों में ग़लतियाँ करने के भय ने हमारे इस विश्वास को आकार दिया है कि 'कलाएँ' हमारे लिए नहीं हैं। यह धारणा कला को सही या ग़लत ठहराने के पारम्परिक दृष्टिकोण से निकलती है। उदाहरण के लिए, किसी चित्र को प्राय: तभी सुन्दर माना जाता है जब वह सटीक ढंग से वास्तविकता का निरूपण करता हो। फिर भी, कुछ सबसे विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार, जैसे विन्सेंट वॉन गो और पाब्लो पिकासो, ठीक इसीलिए जाने जाते हैं क्योंकि उनकी रचनाएँ 'विशुद्धता' और परिपूर्णता के पारम्परिक मानकों को नहीं मानतीं। यदि हममें से कई लोगों की तरह वे भी कलाओं से डरते तो दुनिया उनकी उत्कृष्ट रचनाओं से वंचित रह जाती।

चित्र 1: कलाएँ बच्चों को खुलकर अभिव्यक्त करने के अवसर देती हैं

एनईपी 2020, जिसे अच्छी तरह संरचित एनसीएफ का आधार हासिल है, हर कक्षा में 'कला के एकीकरण' पर ज़ोर देती है। इस एकीकरण तक दो तरीक़ों से पहुँचा जा सकता है : पाठ्यचर्या के एक अंग के रूप में और शिक्षण विधि के साधन के रूप में। दोनों तरीक़े कक्षा के वातावरण को समृद्ध बनाने में अलग-अलग, लेकिन पूरक भूमिकाएँ निभाते हैं।

आइए, अब इसकी बात करते हैं कि हमें अपने शिक्षण में कलाओं को क्यों, और किस तरह शामिल करना चाहिए। मैं विभिन्न परिस्थितियों और सीखने के अलग-अलग परिवेश में बच्चों व शिक्षकों के साथ काम करने के अपने अनुभव से मिली समझ को साझा करूँगी। आशा करती हूँ कि इससे आपको अपनी अगली कक्षा के लिए कुछ उपयोगी सुझाव मिल सकेंगे।

पाठ्यचर्या के एक अंग के रूप में कला

हर एक बच्चे के लिए भागीदारी करने, अपनी रुचियों या कौशलों को साझा करने और कलात्मक परियोजनाओं में सहयोग करने की जगह बनाकर हम सही मायनों में एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देते हैं। यह तरीक़ा सभी आयु वर्गों के लिए काम करता है, बशर्ते हम व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और रचनात्मक योगदानों को प्रोत्साहित करें।

सहयोग कैसे काम करता है

मेरी पसन्दीदा गतिविधियों में से एक है सामूहिक कोलाज कला। इसे आवश्यकतानुसार रूपान्तरित करके किंडरगार्टन से बारहवीं तक के बच्चों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। एक बार जब सहयोग से बनी इन कलाकृतियों को दीवार, नोटिस बोर्ड, वग़ैरह पर लगाया जाता है तो वे निरन्तर विद्यार्थियों को प्रेरित करती रहती हैं, और स्कूल के समुदाय में उनकी जगह के बारे में उन्हें भरोसा दिलाती रहती हैं।

जब हम कला-आधारित सहयोगात्मक परियोजनाओं को शिक्षण विधि में शामिल करते हैं तो सहपाठियों के बीच क्रियाशीलता नाटकीय रूप से सकारात्मक दिशा में मुड़ जाती है। किशोर उम्र के बच्चों की एक कार्यशाला में मैंने देखा था कि कुछ बच्चे दूसरे बच्चों पर प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन कला-आधारित नियमित गतिविधियों के माध्यम से ये विद्यार्थी सत्ता के संघर्ष को एक तरफ़ रखकर मिल जुल कर और सहयोगपूर्ण ढंग से काम करते हुए अपनी सामूहिक कलाकृति को बना सके, और प्रस्तुत कर सके। एक और सशक्त स्मृति जो मेरे दिमाग़ में छाई रहती है वह है, बच्चों के एक ऐसे समूह को मिल जुल कर समूह गीत गाते देखना जिसमें एक ऐसा बच्चा भी शामिल था, जिसे सीखने से जुड़ी परेशानियाँ पेश आती थीं। उनकी सामूहिक गतिविधि में एकता और साझा उद्देश्य का जो गहरा भाव था वह बहुत प्रगाढ़ था, और अधिकांश कक्षा परिवेशों में इसे हासिल करना बहुत मुश्किल होता है।

ग़ैर-निर्णायक होना क्यों बेहद ज़रूरी है

कलाएँ बच्चों को ख़ुद को खुलकर अभिव्यक्त करने की एक अनोखी, ग़ैर-निर्णायक जगह प्रदान करती हैं। यह ज़रूरी है कि शिक्षक हर एक बच्चे की रचना पर ग़ैर-निर्णायक प्रतिक्रियाएँ

चित्र 2 : बच्चों की कलाकृति को ग़ैर-निर्णायक होकर देखना ज़रूरी है

दें। ये प्रतिक्रियाएँ वर्णनात्मक और विस्तृत होनी चाहिए जैसे कि, "मुझे दिख रहा है कि तुमने इस हिस्से को बनाते समय बहुत बारीक़ियाँ शामिल की हैं"; "ऐसा लगता है कि इसे लिखते हुए तुमने अपनी ही ज़िन्दगी से प्रेरणा ली है"; आदि। ये "वाह!"; "कितनी सुन्दर है!"; आदि जैसी निजी या मनमौजी प्रतिक्रियाएँ नहीं होनी चाहिए। इस जगह में कुछ भी अच्छा या बुरा; सही या ग़लत नहीं होता।

अधिक संरचित या अकादमिक गतिविधियों के उलट, कलात्मक अभिव्यक्ति ग़लत होने के भय के बग़ैर खोजबीन करने की दावत देती है। चाहे चित्रकारी हो, संगीत, नृत्य हो या फिर कहानी सुनाना, बच्चे इनके माध्यम से अपने मनोभावों, विचारों और नज़रियों को ऐसे तरीक़ों से सम्प्रेषित कर सकते हैं जो बेहद व्यक्तिगत और उनके व्यक्तित्व का आईना होते हैं। यह खुला ढंग बच्चों को अवसर देता है कि वे ख़ुद को अपने प्रयासों के लिए मूल्यवान महसूस कर सकें। वे यह महसूस न करें कि अपनी रचना की गुणवत्ता या सटीकता के लिए उन्हें आँका जा रहा है। कला की दुनिया में हर योगदान का अपना अर्थ होता है, और यह बच्चे में आत्मविश्वास व जुड़ाव के भाव को बढ़ावा देता है। कलात्मक चश्मा हर उस बच्चे के लिए जगह बना देता है जो किसी सपाट पहाड़ या गुलाबी आसमान का चित्र बनाता है।

प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण है, परिणाम नहीं

हमें इस बात को समझना होगा कि कला को रचने की प्रक्रिया, अन्त में सामने आने वाली कलाकृति की तुलना में कहीं ज़्यादा महत्त्व रखती है। कलात्मक अभिव्यक्ति का असल महत्त्व पूरी प्रक्रिया में बच्चे की भागीदारी, उसकी पेंसिल / ब्रश से निकले हर एक निशान की पीछे की कहानी, व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से किसी पटकथा के आकार लेने के तरीक़े और नृत्य की हर एक चाल की मौलिकता में बसता है।

शिक्षकों के रूप में, जब हम अपना ध्यान इस बात पर लगाते हैं कि कोई कला कैसे रची गई– यानी कलाकृति के अन्तिम रूप को आकार देने में लगा भागीदारी का स्तर, विवेचनात्मक सोच और प्रयास– तब हम वाक़ई में हर बच्चे की यात्रा को समझना शुरू करते हैं। हर एक बच्चे की परिस्थिति, क्षमताओं और विकास को देखने पर हम यह समझ पाते हैं कि किस प्रकार कला ने उन्हें आत्माभिव्यक्ति की जगह प्रदान की है।

आइए, मैं शिक्षक के रूप में अपना एक अनुभव आपके साथ साझा करती हूँ। कलाकृति के लिए दिया गया संकेत सरल-सा था : एक भू-दृश्य बनाइए। मैं जब बच्चों के आसपास से गुज़री, मैंने देखा कि अधिकांश बच्चों ने बहुत आकर्षक दृश्य बनाए थे– पहाड़ों के बीच में से बहती हुई नदी और आगे जाकर एक कुएँ के बग़ल में बनी एक छोटी-सी झोपड़ी। यह सब देखा-देखा-सा, अनुमानित था। लेकिन एक बच्ची का चित्र सबसे अलग था : आधा दिख रहा एक पेड़, ख़ाली आसमान, और दूर एक अन्य पेड़ पर बँधा एक झूला। मुझे जिज्ञासा हुई। मैं उसके पास बैठी, और उससे उसके चित्र के बारे में बताने को कहा। मुझे पता था कि वह कुछ समय पहले ही दूसरे राज्य से यहाँ रहने आई थी। उसने मुझे बताया कि यह उसके गाँव के घर से दिखने वाला दृश्य था। जब मैंने उससे पूछा कि क्या उसे उस जगह की याद आती है, उसने हामी में सिर हिलाया। उस क्षण, उसकी यह कलाकृति एक चित्र से कहीं बढ़कर कुछ हो गई थी – यह उसकी भावनाओं, स्मृतियों और कुछ खोने के एहसास की ओर खुलने वाली खिड़की थी। उसे ख़ुद को अभिव्यक्त करने की जगह देने से एक ऐसी कहानी हमारे सामने आई जिसका हमें दूर-दूर तक अन्दाज़ा भी नहीं था। इस अनुभव ने मुझे यह याद दिलाया कि किसी कला को मूर्त रूप देने, और फिर उसके बारे में सोच-विचार करने की क्रिया किस प्रकार अनकही भावनाओं की परतों को खोल सकती है, ख़ासतौर पर ऐसे बच्चों के मामलों में जो किसी बदलाव या दुःख से गुज़र रहे हों।

कला के माध्यम से किया जाने वाला उपचार किसी को भी जीवन के किसी भी चरण पर लाभ पहुँचा सकता है। फिर चाहे वह भावनात्मक कष्ट से गुज़र रहा कोई बच्चा हो, अपनी पहचान की तलाश करता कोई किशोर हो, या फिर घबराहट से जूझता कोई वयस्क। केवल प्रकट घावों या सदमे वाले लोग ही नहीं, बल्कि तनाव, अनिश्चितता, या बस रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के दबाव झेल रहा कोई भी व्यक्ति कला की रचना करने की प्रक्रिया से लाभ उठा सकता है। कला की शास्त्रीय तकनीकों में से एक, 'वेट-ऑन-वेट' पेंटिंग (wet-on-wet painting), कला की इस उपचारात्मक प्रकृति को देखने में मेरे लिए बहुत बड़ी प्रेरणा रही है।

वेट-ऑन-वेट पेंटिंग

इस पद्धति में, काग़ज़ को पानी में भिगो दिया जाता है, और जब वह गीला ही रहता है, बच्चे उसपर हलके पारभासी रंग लगाते हैं। फिर ये रंग आपस में मिलना और बहना शुरू कर देते हैं, जिससे धीमे-धीमे रूपान्तरण और सूक्ष्म प्रभाव बनना शुरू हो जाते हैं। यह तकनीक सटीकता की जगह प्रक्रिया पर ज़ोर देती है, और बच्चों को विस्तृत या निश्चित नतीजे को हासिल करने की बजाय रंगों की तरलता और उनके आपसी खेल को अनुभव करने के लिए प्रेरित किया जाता है। बहते रंग शान्ति और सुकून के एहसास को बढ़ाते हैं, और बच्चा काग़ज़ पर रंग लगाने की शान्तिपूर्ण लय में खो जाता है। इस तकनीक में किसी दोषरहित रचना की बजाय संवेदी अनुभव पर दिया जाने वाला ज़ोर भावनात्मक सन्तुलन, आत्मस्वीकृति और रचनात्मकता में सहयोग करता है।

शिक्षण विधि के रूप में कला

कला शिक्षण विधि या किसी कक्षा में किसी अवधारणा को समझाने के लिए कला-आधारित प्रक्रियाओं के इस्तेमाल की सिफ़ारिश और हिमायत लम्बे समय से की जाती रही है। लेकिन शिक्षण विधि में कलाओं के एकीकरण की चुनौती अकसर संसाधनों की कमी, कला के विशिष्ट रूपों के साथ शिक्षक की सहजता न होने, और समय पर शैक्षिक लक्ष्यों को पूरा करने के दबाव के रूप में सामने आ जाती है।

संसाधन अवरोध नहीं बनने चाहिए

संसाधनों की उपलब्धता शिक्षकों के सामने आने वाली सबसे बड़ी बाधाओं में से एक होती है। कला की रचना के लिए बहुत-सी वस्तुओं की आवश्यकता और संग्रह का विचार शिक्षकों को कोई कला-समन्वित पाठ की योजना बनाने के प्रति हतोत्साहित कर देता है। असलियत में, कला-आधारित कक्षा सत्र का सबसे ज़रूरी उपकरण होता है 'अवलोकन'। हम अपने आसपास की वस्तुओं से ढेर सारी प्रेरणा ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, पाठ्य पुस्तक से कोई सरल-सी कविता ले लें, और पेंसिल, डस्टर, तालियों या गुनगुनाने के द्वारा लयात्मक ध्वनियाँ निकालते हुए इस कविता का एक संगीतमय संस्करण बना लें। इसके बाद, इस कविता के गायन को एक गतिविधि बना लें, ताकि बच्चों को कविता पक्की भी हो जाए और कक्षा में हर्ष का माहौल भी बन जाए। कक्षाओं में इन गतिविधियों का उपयोग संगीत के माध्यम से अवधारणात्मक समझ को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। रंगमंच और भूमिका निर्वाह-आधारित गतिविधियों में भी संसाधनों का कम ही इस्तेमाल होता है। कठपुतलियों के खेल जैसी तकनीकों में भी बहुत कम या कोई लागत नहीं लगती।

चित्र 3 : शिक्षकों द्वारा कम संसाधनों में बनाई गई कठपुतली

यहाँ शिक्षकों के द्वारा हाथ से नियंत्रित होने वाली कठपुतली के इस्तेमाल की एक झलक दी गई है। यह कठपुतली उन्होंने एक दूसरे से संवाद करने के लिए ख़ुद ही तैयार की थी। हम रंगमंच-आधारित इन तरीक़ों का इस्तेमाल कोई कहानी सुनाने के लिए, किसी अवधारणा से बच्चों को परिचित कराने, और कक्षा में किसी चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए कर सकते हैं।

सीखने का आनन्दमय अनुभव क्यों महत्त्वपूर्ण है

एक शिक्षण विधि के रूप में कला न सिर्फ़ शैक्षिक अधिगम को बढ़ावा देती है, बल्कि बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास में भी सहयोग करती है। यह एक ऐसा वातावरण निर्मित करती है जिसमें बच्चे ख़ुद को अभिव्यक्त कर पाते हैं, अपनी भावनाओं को सँभाल पाते हैं, और सीखने की प्रक्रिया में आनन्द प्राप्त करते हैं। एक ख़ुश बच्चा अकसर ज़्यादा संलग्न, जिज्ञासु और सीखने के प्रति खुलापन लिए होता है। सकारात्मक भावनाएँ रचनात्मकता, तथ्यों को स्मृति में रखने की क्षमता और सामाजिक-भावनात्मक कौशलों को बढ़ा सकती हैं, और ये सभी सीखने के बेहतर परिणामों में योगदान देते हैं।

अपने रोज़ के कक्षा सत्रों में कला को शामिल करने के सबसे आसान तरीक़ों में से एक है, तैयारी गतिविधियाँ कराना। ये त्वरित, रचनात्मक अभ्यास आपके रोज़ाना के कार्यों में कला को निर्बाध रूप से शामिल कर सकते हैं, और एक सकारात्मक मनोदशा का संचार कर सकते हैं। किसी गतिविधि के प्रति बच्चों की प्रतिक्रियाएँ शिक्षक को यह संकेत दे सकती हैं कि बच्चे प्रेरित महसूस कर रहे हैं या नहीं। दिन की शुरुआत में पाँच मिनट की कोई कला-आधारित गतिविधि भी बच्चों को सीखने और जानकारी को स्मृति में रखने में मदद कर सकती है। इन गतिविधियों को शैक्षिक अवधारणा से जोड़कर शुरुआत से ही विद्यार्थियों की समझ को गहरा किया जा सकता है, और उनमें जिज्ञासा पैदा की जा सकती है। हाथ से चलाई जाने वाली एक कठपुतली का इस्तेमाल करते हुए किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व के बारे में 2-3 मिनट कहानी सुनाने के साथ अपने दिन की शुरुआत करने की कल्पना करके देखिए!

अँग्रेज़ी से एकलव्य, भोपाल द्वारा अनुवादित।

दीपिका शर्मा एक सलाहकार हैं जो प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास, मानसिक स्वास्थ्य और कला के द्वारा उपचार में विशेषज्ञता रखती हैं। वह स्वराहील्स फ़ाउण्डेशन की सह-संस्थापक निदेशक हैं और निवारक मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बच्चों के लिए अपने-आप को खेल-आधारित व कला-आधारित पद्धतियों के माध्यम से अभिव्यक्त करने हेतु सुरक्षित स्थान निर्मित करने के प्रति समर्पित हैं।

सम्पर्क : deepika.sh86@gmail.com